विचार बिन्दु

जिसने स्वयं को समझ लिया हो, वह दूसरों को समझाने नहीं जायेगा। –धम्मपद

इतिहास का सच अब फिल्म बनाने वाले बताने लगे हैं!

एक कल सिनेमाघरों की जगह मल्टीप्लेक्स आ जाने तथा सिनेमा के डिजिटल हो जाने के साथ उसके बड़े परदे से सिमट कर स्मार्टफोन की स्क्रीन आ जाने और ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म के प्रादुर्भाव से न केवल दर्शकों का सिनेमा देखने का अनुभव बदला है बल्कि फिल्मों का कलेवर भी बदल गया है। इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में फिल्मों का एक नया दौर शुरू हुआ है जिससे निःसंदेह भारतीय सिनेमा में फिल्मों के कथानक तथा उनके प्रस्तुतिकरण में भी विविधता आई है। ऐसे विषय जो कभी वर्जनाओं की श्रेणी में आते थे अब फिल्मों में आम हो चले है, वे चाहे यौन सम्बन्ध हों, नग्नता हो या हिंसा हो। पिछली सदी के हिन्दी सिनेमा के स्वर्णकाल की मासूमियत का स्थान वैचारिक बौद्धिकता ने ले लिया है। अब साइकोलॉजिकल थ्रिलर, बायोपिक, डार्क कॉमेडी, क्राइम ड्रामा, पैन-इंडियन ऐक्शन और नजदीकी समय के इतिहास का एक खास मकसद से प्रस्तुतिकरण चलन में है। कभी बुद्धिजीवियों को बड़ी शिकायत रहती थी कि भारत में राजनीतिक सिनेमा नहीं बनता। ऐसी बातें करने वाले लोग अधिकतर वाम पक्ष की ओर झुकाव रखने वाले होते थे। फिर धीरे-धीरे समांतर सिनेमा आया और उसके आगे की शृंखला में राजनीतिक सिनेमा का उद्भव हुआ। उनके एक तरह के नज़रिये वाली खूब फिल्में बनी। फिर देश में अचानक सत्ता की राजनीति में उलटफेर हो गया। भारत के मतदाताओं ने उन्हें चुन लिया जो वैचारिक धरातल पर प्रतिगामी माने जाते रहे थे। ध्रुवीकरण की राजनीति में जब वाम पक्ष के सामने वाला दूसरा ध्रुव अपनी जड़ें जमा गया है और अब उसके नजरिये वाला राजनीतिक सिनेमा ताल ठोक रहा है। साथ ही सिने माध्यम प्रचार का उद्यम बन गया है। प्रतिद्वंद्वी चुनावी राजनीति के मौजूदा दौर में सिने-निर्माता और निर्देशक समकालीन इतिहास की कहानी को एक खास नजरिए में पिरो कर प्रस्तुत करके जन भावनाओं को उभारने के व्यापार में लगे हैं। ऐसे ही एक निर्माता, निर्देशक और लेखक है विवेक रंजन अग्निहोत्री जिन्होंने देश के हाल के इतिहास की फ़ाइलें खोली है। 'द ताशकंद फाइल्स' और 'द कश्मीर फाइल्स' के बाद अग्निहोत्री अब अपनी तीसरी फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' लेकर आए हैं। अपनी तीनों फिल्मों के बारे में उनका दावा है कि वे समकालीन इतिहास का नया सच सामने लेकर आए हैं। फिल्में बनाने वाले इतिहासकार नहीं होते हैं। वे मनोरंजन के सौदागर होते हैं। वे जो ऐतिहासिक घटनाओं की कहानियां कहते हैं वह उनका अपने नज़रिये से लिखी होती हैं। हालांकि दर्शक इतिहास सीखने के लिए फिल्में देखने नहीं जाता, लेकिन सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जिसमें मासूम दर्शक भावना में बह कर सिनेकार के दिखाए गए चुनिंदा वर्सन को सम्पूर्ण इतिहास मान लेता है। फिल्मी कथानक में कल्पना और हकीकत के बीच आम-दर्शन फ़र्क नहीं करता। ध्रुवीकृत राजनीति के माहौल में ऐसी फिल्मों को केप्टिव दर्शक मिल जाते हैं। आज का बाज़ार भी ऐसी फिल्मों को बढ़ावा देता है।

समीक्षकों का कहना है कि 'द बंगाल फाइल्स' इतिहास की संपूर्ण तस्वीर पेश नहीं करती बल्कि एक विशेष दृष्टिकोण को तीखे अंदाज़ में प्रस्तुत करती है। इसलिए उसमें इतिहास की पूरी सच्चाई नहीं है। 'द बंगाल फाइल्स' में जिन घटनाओं को केंद्र में रखा गया है उनके बारे में यह बेतुका दावा किया गया है कि अब तक ये घटनाएं दबा दी गई थी। बंगाल में 1946 में मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग के 'डायरेक्ट एक्शन' के आव्हान पर बंगाल में हुई हिंसा के सारे पहलू हमेशा ही सार्वजनिक रूप से उपलब्ध रहे हैं। उस दौर और उन घटनाओं पर समकालीन अखबारों में भरपूर कवरेज के अलावा अब तक सैकड़ों किताबें और असंख्य लेख ही नहीं लिखे जा चुके हैं बल्कि विश्वविद्यालयों में अकादमिक अध्ययन भी हो चुके हैं। यदि कोई यह कहता है कि ये जानकारियां छुपा के रखी गई थी, सच नहीं है। अग्निहोत्री अपनी फिल्मों में इतिहास की घटनाएं लेते हैं मगर उतना ही सच दिखाते हैं जो एक विशेष वैचारिक राजनीति के अनुकूल होता है। सिनेकार एक विशिष्ठ वर्ग की भावनाओं को उभार कर वहीं से अपना दर्शक वर्ग बनाना चाहता है। कोई सिनेकार यदि ऐतिहासिक घटनाक्रम को अपनी फिल्म के कथानक में पिरोता है तो यह उसका विशेषाधिकार होता है कि वह कितना कहे और कैसे कहे! मगर उससे यह अपेक्षा जरूर होती है कि वह ऐतिहासिक संदर्भों में हर-फेर नहीं करे। ऑडियोविजुअल की शक्ति का उपयोग राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जगत में हमेशा किया जाता रहा है। एडॉल्फ हिटलर जैसे नेताओं ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान फिल्मों को प्रचार उपकरण के रूप में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया। रूसी क्रांति के बाद रूस में वामपंथी विचारधारा के अनुरूप समाज बनाने के लिए सिनेमा का उपयोग किया गया। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी परवान चढ़ती गई, राजनीतिक और आर्थिक ताकतों ने लोगों के दृष्टिकोण को बदलने और आकार देने में सिनेमा का उपयोग किया, चाहे वह अपने फायदे के लिए हो या लोगों के फायदे के लिए। पिछले दौर की जिन फिल्मों पर पालयनवादी होने की तोहमत लगाई जाती थी वे दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ, उन्हें शिक्षित भी करती थी। हालांकि अनेक फ़िल्मकारों ने वर्ग संघर्ष और समाजवाद से प्रेरित कहानियां अपनी फिल्मों में कही किन्तु वे आज जैसी राजनीतिक फिल्में नहीं थी। उनमें मानवीय मूल्यों की बात थी। वे भी दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती थीं। उन्हें दयालु बनाती थी। वे दूसरों की मदद करने और मानवता के लिए अच्छा करने के लिए प्रेरित करती थी। अब हर तरफ नफरत की आंधी है, हिंसा है। सिनेमा का जो दौर सुनहरा कहा जाता है उसमें कैसी भी फिल्म हो अंत में बुराई पर अच्छाई की जीत ही दिखाई जाती थी। फिल्में हिंसा के उन्माद से बचने की शिक्षा देती थीं; भावनाओं को जगाती थी; रुलाती और हंसाती थी तो साथ ही जीवन को जीने लायक बनाती थीं। सुनहरे दौर की फ़िल्में ज़्यादातर सामाजिक मुद्दों पर होती थीं- गरीबी, वर्ग-संघर्ष, गांव-शहर का टकराव, प्रेम, बलिदान, पारिवारिक रिश्ते आदि। उनका उद्देश्य होता था समाज को जोड़ना और आदर्श प्रस्तुत करना। मगर फाइल्स फ़िल्में इतिहास के विवादित और राजनीतिक प्रसंगों पर केंद्रित हैं – जैसे शास्त्रीजी की रहस्यमय मृत्यु (ताशकंद), कश्मीरी पंडितों का पलायन (कश्मीर), और बंगाल में नरसंहार (बंगाल)। इनका ढांचा अर्ध-डॉक्यूमेंट्री जैसा होता है। इंटरव्यू, वास्तविक घटनाओं के हवाले, डॉक्यूमेंटेशन, और तीखे संवाद – यानी भावनात्मक मेलोड्रामे पर जोर होता है। सुनहरे दौर में संगीत फिल्म का सबसे बड़ा आकर्षण होता था। गाने ही कहानी को आगे बढ़ाते थे। अब फाइल्स फ़िल्मों में संगीत लगभग नगण्य या बैकग्राउंड स्कोर तक सीमित है। इनमें संगीत नहीं बल्कि संवाद और दृश्य कथा का मुख्य आधार होते हैं। पहले सिनेमा एक तरह से मनोरंजन और नैतिक शिक्षा का माध्यम था। दर्शक थिएटर छोड़कर जाते तो उनके दिल में उम्मीद, संवेदना या आदर्श जगते थे। फाइल्स फ़िल्मों का उद्देश्य झकझोरना और एक विशेष दृष्टिकोण से सोचने पर मजबूर करना है। ये मनोरंजन की जगह आलोचना और ऐतिहासिक कलह को सामने रखती हैं। तब का सिनेमा राष्ट्र निर्माण की परियोजना से जुड़ा था। नेहरू युग की समाजवादी सोच का असर फिल्मों पर जरूर था मगर वह चुनावी राजनीति के उपयोग के लिए नहीं था। फाइल्स जैसी फिल्में समकालीन राजनीति और पहचान की बहस से पूरी तरह प्रभावित हैं। वर्तमान ध्रुवीकृत माहौल में इनकी स्वीकृति भी राजनीतिक दृष्टि से होती है। इस तरह 'द ताशकंद फाइल्स,' 'द कश्मीर फाइल्स' और 'द बंगाल फाइल्स' हिन्दी सिनेमा के भावुक, आदर्शवादी और गीत-संगीत प्रधान सुनहरे दौर से बिलकुल अलग हैं। ये सिनेमा को एक पॉलिटिकल थ्रिलर और ऐतिहासिक विमर्श का मंच बनाती हैं, जहां संवेदना से ज्यादा तथ्य, विचार और विवाद अहम हो जाते हैं।

फ़िल्में संस्कृति का आईना होती हैं हर फ़िल्म एक ख़ास संस्कृति में सेट और विकसित होती है। मुश्किल तब होती है जब छिछली राजनीति संस्कृति को व्याख्यायित करने लगती है। यह बाज़ार को मुफीद होता है। फिल्मों का उपयोग समुदायों के बीच संवाद और मेल-मिलाप की जगह नफरत और संघर्ष की भावनाएं उभारने में होने लगता है। हमारी संस्कृति की विविधता के बावजूद फिल्मों ने देशवासियों को एकजुट रहने में मदद की लेकिन अब फिल्में अलग-थलग करने लगी हैं। फिल्में आधुनिक दुनिया को पिछली पीढ़ियों से जोड़ती हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण वियतनाम युद्ध की फिल्में हैं जो बताती हैं कि उस समय क्या हुआ था और आज की पीढ़ी को युद्ध के नकारात्मक महत्व को समझने में मदद करती हैं। कई सामाजिक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अब फ़िल्में हिंसा और दूसरे लोगों की पीड़ा को स्वीकार्य बनाकर लोगों में सहानुभूतिपूर्ण भावनाओं को खत्म कर रही हैं। दर्शकों की उदासीनता बढ़ रही है। नई पीढ़ी के दर्शकों को परदे पर खूनी हिंसा देखने में आनंद आता हैं क्योंकि प्रचार माध्यमों ने उन्हें इसी प्रकार तैयार किया है। पीड़ित की मदद न करने या हिंसा को सही ठहराने की यह प्रवृत्ति मीडिया द्वारा सहानुभूतिपूर्ण भावनाओं को असंवेदनशील बनाने के परिणामस्वरूप बढ़ी है। हालांकि फ़िल्मी भावुकता दर्शक को भीतर से नहीं हिलाती। लोग हॉल से बाहर निकल कर वही हो रहते। 'मेरे देश की धरती सोना उगले' गाना ख़ूब गाया गया। उपकार फिल्म सुपरहिट हो गई। उसे ढेर सारे अवार्ड मिले। पर उस भारत के गौरव-गान में सिनेमाई भावोत्तेजना काम न आई। किसानों के प्रति नज़रिया आज तक नहीं बदल पाया है। न लोगों का, न राज का। मगर फाइल्स जैसी फिल्में समकालीन इतिहास का जो बोध कराती है उससे सोशल मीडिया के जरिए इन्फ़्लुएन्सरों द्वारा बनाया जा रहा भ्रम जरूर पुख़्ता होता चला जाता है।

एडॉल्फ हिटलर जैसे नेताओं ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान फिल्मों को प्रचार उपकरण के रूप में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया। रूसी क्रांति के बाद रूस में वामपंथी विचारधारा के अनुरूप समाज बनाने के लिए सिनेमा का उपयोग किया गया। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी परवान चढ़ती गई, राजनीतिक और आर्थिक ताकतों ने लोगों के दृष्टिकोण को बदलने और आकार देने में सिनेमा का उपयोग किया, चाहे वह अपने फायदे के लिए हो या लोगों के फायदे के लिए।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

बाबा रामदेवजी ने सदियों पहले छुआछूत व सांप्रदायिकता मिटाने पहल की थी

जुगल किशोर बिस्सा

शक्ति, भक्ति, आध्यात्मिकता और निस्वार्थ सेवा भाव की कर्मभूमि रामदेवरा में लोकदेवता बाबा रामदेवजी का ऐतिहासिक मेला श्रद्धा और उत्साह के साथ आरंभ हुआ। यह मेला प्रतिवर्ष दो बार आयोजित होता है और केवल राजस्थान ही नहीं, बल्कि पूरे देश-विदेश से लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

करीब 600 वर्ष पूर्व बाबा रामदेवजी ने समाज से छुआछूत और सांप्रदायिकता जैसी कुरीतियों को मिटाने के लिए आंदोलन चलाया था। उन्होंने समानता, भाईचारा और एकजुटता का संदेश देकर समाज को नई दिशा दी। इसी कारण उन्हें जनसमस्या निवारक और अमरपुरुष के रूप में पूजा जाता है। हर वर्ष बाबा की सुदी दूज के अवसर पर समाधि पर गंगाजल व दुग्धाभिषेक किया जाता है और बाबा को स्वर्ण मुकुट अर्पित किया जाता है। सैकड़ों वर्षों से अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित है, जो सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक बनी हुई है। इस बार भी लाखों श्रद्धालु दूर-दराज़ से रामदेवरा पहुंचे, वहीं देशभर के बाबा रामदेव मंदिरों में भी विशेष आयोजन किए जा रहे हैं। बाबा रामदेवजी को सनातन धर्म में भगवान श्रीकृष्ण का अवतार द्वारकाधीश और मुस्लिम समाज में पीरों के पीर रामापीर के रूप में मान्यता प्राप्त है। उन्हें निर्धन का धन, कोढ़ियों को काया देने वाले, अंधों को आंखें देने वाले, निःसंतान को संतान देने वाले जैसी उपाधियों से सम्मानित किया गया है।

मंदिर परिसर और श्मशान भूमि का महत्व :-रामदेवरा का मंदिर परिसर मूलतः श्मशान भूमि क्षेत्र है, जहाँ स्वयं बाबा रामदेवजी ने समाधि ली थी। धार्मिक मान्यता है कि श्मशान भूमि में समाधि स्थल होना विशेष संदेश देता है, जीवन और मृत्यु के बीच समानता व अस्थिरता का बोध, जात-पांत और भेदभाव से परे होकर सबका एक ही धरती में विलीन होना, सांसारिक मोह-माया से परे निष्काम सेवा और परोपकार का महत्व। इसी कारण समाधि स्थल को मोक्ष और मुक्ति का प्रतीक माना जाता है, जहाँ हर धर्म, हर जाति और हर वर्ग का व्यक्ति बिना भेदभाव के दर्शन करने आता है। मेले के दौरान रामदेवरा में भजन संध्या, कथावाचन, लोकगीत-लोकनृत्य और भजन प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं। राजस्थान की लोक संस्कृति से जुड़े मांगणियार और लंगा कलाकार अपनी प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं। इसके अलावा झांकी प्रदर्शन, रामापीर की शोभायात्रा और ध्वजा यात्रा मेले के प्रमुख आकर्षण हैं।

श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा के लिए प्रशासन ने विशेष इंतजाम किए। समाधि परिसर में सीसीटीवी कैमरे और बैरिकेडिंग लगाई गई। पुलिस, होमगार्ड और स्वयंसेवकों की विशेष ड्यूटी लगाई गई। अस्थायी बस स्टैंड, पार्किंग स्थल और पेयजल स्टॉल की व्यवस्था की गई। स्वास्थ्य विभाग की ओर से मोबाइल डिस्पेंसरी और प्राथमिक उपचार केंद्र स्थापित किए गए हैं। पंचायत समिति और स्वच्छ भारत मिशन की टीमें सफाई और स्वच्छता व्यवस्था सुनिश्चित कर रही हैं।

बाबा रामदेवजी की समाधि और मेले की धार्मिक परंपराओं का संचालन परंपरागत रूप से गादीपति परिवार करता है। समाधि पर दुग्धाभिषेक, स्वर्ण मुकुट चढ़ाना, आरती और पूजा-अर्चना की मुख्य जिम्मेदारी गादीपति निभाते हैं। मेला अवधि में देशभर से आने वाले संत-महात्माओं, जनप्रतिनिधियों और श्रद्धालुओं का स्वागत भी गादीपति परिवार की देखरेख में किया जाता है। समाधि की धार्मिक अनुशासन और परंपराओं की निरंतरता बनाए रखना उनकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। गादीपति परिवार ही समाधि की ओर से धार्मिक कार्यक्रमों की अगुवाई और आशीर्वचन प्रदान करता है।

रामदेवरा में मौजूद बाबा की समाधि।

जुगल किशोर बिस्सा
वरिष्ठ पत्रकार

पाली कलैक्टर कार्यालय में यूज एंड थ्रो प्लास्टिक नहीं

पाली,(नि.सं.)। जिला कलैक्टर एलएन मंत्री की पहल पर जिला कलैक्टर कार्यालय में एक अभिनव पहल प्रारंभ की गयी है, जिसमें रामसेतु की गिलहरी कार्यक्रम के तहत जिला कलैक्टर कार्यालय में अब प्रथम तौर पर स्वैच्छिक रूप से 51 दिन तक यूज एंड थ्रो प्लास्टिक जिसमें यूज एंड थ्रो पैन, प्लास्टिक बोतल और डिस्पोजल का प्रयोग अब जिला कलैक्टर मंत्री के मार्गदर्शन में जिला कलैक्टर कार्यालय में नहीं होगा जिसके लिये सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने इसका त्याग का संकल्प लिया है।

इस प्रकार पाली जिला कलैक्टर कार्यालय संभवतः देश का पहला कार्यालय बन गया है जो यूज एंड थ्रो को ही थ्रो कर रहा है।

जिला कलैक्टर एलएन मंत्री के अनुसार त्रेतायुग में रामसेतु निर्माण के समय एक नन्ही गिलहरी ने अपने प्रयास से श्रीराम का ध्यान आकृष्ट किया तथा सभी को एक अमर संदेश दिया कि कितना ही मुश्किल कार्य हो पर हमें अपने सामर्थ्य के अनुसार अपना योगदान अवश्य देना चाहिए। आज यूज एंड थ्रो अपसंस्कृति अत्यधिक विकराल रूप धारण कर रही है समय रहते नहीं सम्भले तो समय बहुत विकट होगा आज हम सबको नहीं सुधार सकते लेकिन आत्म संयम द्वारा रामसेतु की गिलहरी के समान छोटे छोटे प्रयत्न कर अपना योगदान दे सकते है।

उन्होंने बताया कि कोई नागरिक/लोकसेवक/संस्था स्वेच्छापूर्वक इस मुहिम में शामिल होकर स्वयं तथा अपने कार्यस्थल को यूज एंड थ्रो रूपी वस्तुओं एवं विचार को 51 दिन, एक वर्ष अथवा आजीवन अवधि का संकल्प लेकर प्रकृति संरक्षण की दिशा में अपना योगदान दे सकता है। जिला कलैक्टर ने कहा कि पहले ये प्रथम तौर पर जिला कलैक्टर कार्यालय में इसका स्वैच्छिक रूप से ट्रायल किया जा रहा है तत्पश्चात अन्य कार्यालयों में भी इसे प्रारंभ किया जा सकता है। इसमें शीघ्र ही जिला प्रशासन द्वारा एक ई संकल्प पत्र भरवाया जाएगा इसमें उसको सिर्फ तीन कार्य करने है।

जीवन संकट को छोड़कर प्लास्टिक की बोतल (यूज एंड थ्रो) का प्रयोग नहीं करना है। उन्होंने इसके लिये अधिकारियों व कर्मचारियों की टीम बनाकर इसमें आगे बढ़ने के लिये कहा है। साथ ही इसमें तीन अवधि में से किसी एक अवधि का चयन कर ई-संकल्प पत्र सबमिट करेगा तो उसको यह ई सर्टिफिकेट जनरेटर होकर मिलेगा। जिसमें एक तरफ उसका फोटो भी होगा।

इसके लिये आज जिला कलैक्टर कार्यालय में जिला कलैक्टर मंत्री ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से चर्चा की इस अवसर पर एडीएम डॉ बजरंग सिंह, एडीएम अश्विनी के पंवार, प्रशिक्षु आईएएस बिरजू गोपाल, सीईओ मुकेश चौधरी , आदि सभी अधिकारी व कार्मिक मौजूद रहे।

सुनार से ठगी का आरोपी बीकानेर से पकड़ा

जोधपुर, (कासं)। सोशल मीडिया के जरिए जोधपुर के सुनार से संपर्क कर पीले धातु को असली सोना बताकर ठगी कर ली गई। खुद का नाम पता भी गलत बताया। जोधपुर के सुनार से बदले में 42 ग्राम असली सोने की 15 रखडिय़ां ले गया। स्थानीय सुनार ने जब उसके दिए गए धातु को चेक करवाया तो वह नकली सोना निकला। इस पर पीड़ित महामंदिर थाने पहुंचा तथा रिपोर्ट दी गई। मामला सामने आते ही पुलिस हरकत में आई और आरोपी को बीकानेर से पकड़ लिया गया।

महामंदिर थाने के हैडकांस्टेबल शोभाराम ने बताया कि कायस्थों का मोहल्ला, रामदेव चौक, नवचौकियां निवासी नवीन सोनी पुत्र टीकमदास सोनी ने रिपोर्ट दी। इसमें बताया कि उसका सोशल मीडिया इंस्टाग्राम पर एक व्यक्ति से संपर्क हुआ था। सामने वाले व्यक्ति ने खुद को योगेश उर्फ मोहित होना बताया। खुद के पास में सोने की बिस्किट होना बता कर बदले में सोने के जेवरात चाहे थे। उसने खुद के पास 42 ग्राम सोने की ईंट होना बताया। इस पर बाद में दोनों के बीच वार्तालाप होने पर आभूषण अर्जेंट में चाहिए होना कहा था। तब 22 अगस्त को योगेश उर्फ मोहित बने व्यक्ति ने खुद को अहमदाबाद से जोधपुर आना बताया और जल्दी से आभूषण देने की बात की थी। तब रात के समय में नवीन सोनी उससे पावटा स्थित सनसिटी अस्पताल के पास में मिला। उससे 42 ग्राम सोने की ईंट दी और बदले में इतने ही ग्राम की 15 सोने की रखड़ी ले ली। फिर वहां से चला गया।

नवीन सोनी ने जब ईंट को चैक करवाया तो पता लगा कि यह नकली थी। इस पर महामंदिर थाने में मामला दर्ज करवाया। हैड कांस्टेबल शोभाराम ने बताया कि धोखाधड़ी सामने आने पर आरोपी की तलाश आरंभ करते हुए उसे बीकानेर से दस्तयाब कर पकड़ा गया है। आरोपी मूल रूप से चूरू जिले के वार्ड नंबर 6 सुनारों की गली निवासी गौरव पुत्र रतनलाल सोनी है। उसे पुलिस अभिरक्षा में लिया गया है।

आरंभिक पड़ताल में सामने आया कि धातु पर सोने का जोळ चढ़ाया हुआ था। उसने बताया कि पुलिस पूछताछ में बताया कि वह जोळ चढ़ा सोना किसी अन्य से लेकर आया था, मगर उसके बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं दे रहा है। उससे अब सोने की रखडिय़ां बरामदगी के प्रयास जारी है।

आरोपी को यह जोळ चढ़ा धातु बेचना था, तब उसने सोशल मीडिया पर इंस्टाग्राम पर नंबर तलाशे और नवीन सोनी से संपर्क किया था।

अच्छाई को स्वर देना सीखो : सुमति मुनि

जोधपुर, (कासं)। चौरड़िया भवन में चातुर्मास प्रवास पर विराजित सुमति मुनि ने मंगलवार को अपने नित्य प्रवचन मे कहा कि अच्छाई को स्वर देना सीखो। अच्छे व्यक्ति की अच्छी बात करनी चाहिये। गुणों का अर्जन कर अगले भव में साथ ले जा सकते है,लेकिन वस्तु, धन आपके साथ नहीं जा सकते हैं। हम सुबह से शाम तक घन, परिठाह बढ़ाकर पाप कर रहे है। ऐसे पाप कर्म से खुद को बचा कर नेकी की राह पर चलना चाहिए।

मुनि ने कहा कि अच्छे व्यक्तियो में कमी- कमजोरी होना संभव है, मगर हमें इसका ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए। बुरे व्यक्ति की अच्छाई को जानकर उसका तिरस्कार नहीं करें। क्यों कि बुरे व्यक्ति में भी कोई अच्छाई हो सकती है। लेकिन उसकी प्रशंसा हर एक के सामने नहीं करे, प्रशंसा को पचाना उत्तम पुरुषार्थ है। मुनिश्री ने कहा कि आप एक नियमित आदत डाले कि आपके परिवार के सभी सदस्यों के गुणों की खोज करो, परिजन हमारी गलती बताकर हमारे ऊपर उपकार कर रहे है, उनको धन्यवाद दे। रेलगाडी में तरह तरह के डिब्बे होते है, मुसाफिर की यात्रा आरामदायक हो उसके लिए समय पूर्व आरक्षण कराना होता है, बिना आरक्षण यात्रा तकलीफ दायक होते है। हालांकि रेल अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचती है लेकिन कोई कष्ट से तो कोई आराम से यात्रा करता है। मोक्ष हमारा गंतव्य स्थान है, इसके लिए हमे अभी से तैयारी करनी है।

साध्वी श्री ने इससे पूर्व अपने प्रवचन में कहा धर्म प्रवृत्ति करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। पापी व्यक्ति के पाप से प्रभावित होकर धर्म कार्य छोड़ना मूढ़ता है। पुण्य की मंद भाव से करने पर उस उदय भी मंद भाव से होगा। अपने पुराने वस्त्र गरीब को देने से मंद भाव से मंद पुण्य बंधन होगा। दान का ढींढारा कभी नहीं पीटना चाहिए। अच्छे भावो से दान देकर उसका हर जगह ढींढोरा पीटते है तो तीव्र पुण्य का फल नहीं मिलता और आपको जो सफलता मिलनी चाहिये को नहीं मिलेगी।

परिवार में खाना खिलाते वक्त यह भाव आना चाहिये कि यह खाना मै श्रावक, व्रतधारी, तपस्वी को अहो भाव से खिला रही हूं। अहो भाव से परोसने पर तीव्र पुण्य बंधता है । आप गुणों का पोषण करें। कभी भी किसी का विश्वास, रिश्ता, वचन एवं दिल तोड़ने वाले कार्य नहीं करे। इनके टूटने से आवाज तो नहीं होती परन्तु दर्द अवश्य होता हे। संघ अध्यक्ष देवराज बोहरा ने बताया कि गजराज के 18 व मंजू गोगड ने 22की तपस्या धारण की। संचालन राजेन्द्र लुणिया ने किया।

वैदिक गणित कार्यशाला हुई

जोधपुर (कासं)। विधायक-शिक्षा का साथी योजनान्तर्गत मंगलवार का राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, खाण्डा फलसा जोधपुर में वैदिक गणित कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के वैदिक गणित विषय के प्रान्त संयोजक व महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय पूंजला में कार्यरत अध्यापक गुलशन कुमार मदान ने सम्बोधित किया। कार्यशाला में विद्यार्थियों को वैदिक गणित की सहायता से बड़ी बड़ी गणना को न्यूनतम समय में हल करना बताया व श्रीनिवास रामानुजन जी के जादुई वर्गों का अभ्यास करवाया। बालिकाओं में गणित के भय को मिटाकर गणित के जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली विधियों से बिना किसी सहायता से ही मौखिक तीव्र गणनाओं की विधियों का आरंभिक अभ्यास कराया गया। जिसमें बालिकाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यशाला का संचालन योजना के विभागीय समन्वयक अनिल दाधीच ने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व के बारे में छात्राओं को बताया और अपने भीतर छुपी प्रतिभाओं को पहचानने और अपने गुणों की वृद्धि करने का आव्हान किया। शिक्षकों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। फोलो-अप कार्यक्रम के तहत इस श्रृंखला में नियमित रूप से वैदिक गणित का अभ्यास करवाया जाएगा।

निरीक्षण किया

पाली, (नि.सं.)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (अपर जिला न्यायाधीश) विक्रम सिंह भाटी ने रिद्धी सिद्धी सेवा संस्थान द्वारा संचालित मानसिक विमंदित पुनर्वास गृह, रामासिया का विजिट कर आवश्यक निर्देश दिए।

सचिव भाटी ने आश्रम में भोजन-पेयजल व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, पुनर्वास करने की प्रक्रिया इत्यादि के संबंध में जानकारी ली। विजिट के दौरान रसोई की सफाई, कमरों की सफाई, स्नानघर एवं शौचालयों की साफ-सफाई, मौसम के अनुकूल व्यवस्था उचित पाई गई। पुनर्वास गृह में बालकों को संतुलित पौष्टिक आहार उपलब्ध करवाया जाता है। अध्यक्ष भैराराम ने बताया कि पुनर्वास गृह में मन्दबुद्धि बच्चों के आवास, भोजन, शिक्षण एवं योगा की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध हैं। सचिव भाटी ने पुनर्वास गृह से मानसिक विमंदित बच्चों के पुनर्वास के संबंध में भी जानकारी ली। साथ ही पुनर्वास गृह में मिलने वाली सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं तक बालकों की पहुंच सुगम रखने, समय-समय पर बालकों की चिकित्सकीय जांच करवाने तथा बच्चों के रूचि अनुरूप गतिविधियां करवाने के निर्देश दिए गए। इस दौरान पुनर्वास गृह अध्यक्ष भैराराम, प्रबंधक निकी सागर, जीवनराम, दरिया देवी आदि उपस्थित रहे।

कब्रिस्तान मार्ग पर पानी भरा

जालोर, (नि.सं.)। जालोर शहर स्थित शाही ईदगाह मस्जिद और सिलावट समाज कब्रिस्तान जाने वाला रास्ता पानी भराव हटाने एवं रास्ता सही करने को लेकर मंगलवार को ऑल राजस्थान मुस्लिम सिलावट वेलफेयर संस्थान जालौर की ओर से नगर परिषद जालोर के आयुक्त के प्रतिनिधि राजस्व अधिकारी श्रवण कुमार जाट को ज्ञापन सौंपा गया। संस्थान के जिलाध्यक्ष शहजाद खान ने बताया कि विगत 15 – 20 दिन से गीटको होटल से ईदगाह जाने वाला रास्ता पानी भराव एवं सड़क टूटने के कारण बंद हो गया है। जिससे वहां जाने वालों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसको लेकर नगर परिषद आयुक्त प्रतिनिधि को ज्ञापन सौंप कर पानी भराव सही करवाने एवं रास्ता सही करने की मांग की गई।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 10 सितम्बर, 2025

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र सायं 4:03 तक, वृद्धि योग रात्रि 8:31 तक, विष्टि करण दिन 3:38 तक, चन्द्रमा आज सायं 4:03 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 3:38 तक है। आज तृतीय और चतुर्थी का श्राद्ध है। आज चतुर्थी व्रत है। आज पंचक सायं 4:03 पर समाप्त होंगे। आज ईद-ए-मौलाद है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 10:51 से 12:24 तक, चर 3:29 से 5:02 तक, लाभ 5:02 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:34

मेष घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज मन में असंतोष बना रहेगा। दिन मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है।

वृष आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

कन्या परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

धनु घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।